वार्षिक मूल्य 50 रूपये

धर्म जीवन

मार्च – 2016

* बिमारी से जीतकर
* मनुष्य अन्धकार – आवृत जीव है
* गहरी सोच की आवश्यकता
* ग़ाफिल मत रह
* अन्ध विश्वासों का श्राप
* नहीं खाएंगे तो ज़्यादा जिएंगे
* प्रेरणा स्त्रोत
* शुभ संग्राम

बिमारी से जीत कर दूसरों को समक्ष बना रही पूनम

6 फरवरी 1985 को टीमगढ़ मे जब पूनम का जन्म हुआ, उसके पिता साथ नहीं थे। नवजात बच्ची रात भर रोती रही, लेकिन कारण किसी को समझ में नहीं आया। पिता राजेन्द्र प्रसाद श्रोती, जो आर्मी मेडिकल कोर में थे, उसी रात कारगिल से टीकमगढ़ पहुंचे। दिन के उजाले में देखने से पता चला कि बच्ची के दोनों पैर बुरी तरह से सूजे हुए और लाल थे। बच्ची को डाक्टर के पास ले जाया गया तो पता चला कि वह ओस्ट्रोजेनेसिस इम्पर्फेक्टा यानी कमज़ोर हडियों की बीमारी से पीड़ित है।

पिता ने बच्ची के कारण आर्मी से रिटायरमेंट ले लिया और भोपाल आकर बस गए जहां पूनम का इलाज शुरु हुआ। बीमारी के कारण पूनम के पैर, महज डेढ़ फीट के रह गए हाथ–पैर की हडियां लगातार टूटती रही। हाथ भी छोटे रह गए पर दिमाग सामान्य बच्चों की तरह बढ़ता रहा। सेंट्रल स्कूल में पूनम का एडमिशन करवा दिया गया। स्कूल में कभी छोटे धक्के से पूनम की हडडी टूट जाती। लेकिन पूनम की ज़िद थी कि उसे पढ़ना है। हर कक्षा मे वह लगभग 70% अंकों से पास होती रही और एक दिन पापा ने पूनम को व्हील चेयर लेकर दे दी। पूनम जो अब तक दोस्तों और परिवार की गोद में चलती थी, अचानक व्हील चेयर को देखकर चिढ़ गई। फिर जल्दी ही उसे इस बात का अहसास हो गया कि व्हील चेयर उसके लिए बहुत पहले आ जानी चाहिए थी। पूनम के दोस्त उनकी ताकत बने। उसने ग्रेजुएशन की डिग्री पूरी कर ली। अपने तीन फीट के शरीर के साथ व्हील चेयर पर बैठकर पूनम ने एमबीए में एडमिशन लिया। डिग्री पूरी कर वह आम लड़कियों की तरह नौकरी कर परिवार बनाना चाहती थी। लेकिन प्लेसमेंट के दौरान पूनम को लगातार खारिज़ किया जाने लगा। लेकिन उसने हिम्मत नहीं छोड़ी। उन्हे ये साबित करना था कि वो सामान्य इंसान की तरह नौकरी कर सकती है। शरीरिक अक्षमता के कारण मिलने वाली सहानूभूति और रिजेक्शन उन्हे तोड़ने लगे। और एक दिन एक इंटरव्यू के दौरान उन्होनें कह दिया कि रिजेक्ट करना है तो यह कहकर करो कि तुम डिसैबल्ड हो। कम्पनी के अधिकारीयों ने इस शर्त पर उन्हें दी कि वे सामान्य लड़कियों की तरह काम करेंगी। पूनम ने पांच वषों तक उस फर्म में नौकरी की। नौकरी के दौरान भी वो फील्ड वर्क के लिए छटपटाती रही।

नौकरी छोड़ने के बाद वर्ष 2013 में पूनम ने एक एनजीओ की शुरुआत की, जिसमें उन्होनें डिसैबल्ड लोगों को प्राइवेट कपनियों में जॉब दिलाने के साथ ट्रेनिंग देना शुरु किया। पूनम के लिए दोहरी चुनौती थी। पहले तो शरीरिक रुप से कमज़ोर लोगों को हीन भावना से मुक्त कराना, फिर ट्रेनिंग और प्लेसमेंट। पूनम की हड्डीयां टूटती रही और वो एसे लोगों को समाज की मुख्यधारा से जोड़ती रही। इस दौरान उन्हें शादी के कुछ प्रस्ताव भी मिले, लेकिन उसने इन्कार कर दिया। अब वह डिसैबल्ड लोगों के लिए स्पैशल स्कूल से लेकर बड़ा ट्रेनिंग सेंटर तक स्थापित करने के सपने देखने लगी थी। पूनम की एनजीओ में लोग वॉलंटियर बनकर काम करते हैं। उनके दोस्त उन्हें गोद में लेकर घुमाते हैं। दोस्तों के साथ वह हर ऐसा काम करती है जो एक सामान्य लड़की कर सकती है।

मेरी मुलाकात पूनम से होटल सम्राट में हुई जहां 100 वुमन अचीवर्स के रुकने की व्यवस्था की गई। वो एक मित्र की गोद में आई थी। छोटा सा शरीर और बच्चों जैसी आवाज़ में गज़ब का आत्मविश्वास था। आज पूनम सुबह नौ बजे घर से निकलती है और रात को दस बजे तक काम करती है। पूनम जीत गई है शरीर से, और जीत गई है डिसैबल्ड शब्द से।

धर्म जीवन

खण्ड 29 अंक 3

सम्पादक डा. विनोद खेड़ा | मार्च – 2016 वार्षिक मूल्य 50 रूपये | सह सम्पादिका सुरजीत बराड़

मनुष्य अन्धकार – आवृत जीव है।

सर फ्रासिस बेकन इंगलैंड के बहुत बड़े बुद्धिजीवी हुए हैं। उनके लेख ज्ञान की रोशनी से भरपूर हैं। उन्होंने ही वैज्ञानिक विधि का अविष्कार किया है। उनके द्वारा कहा गया एक–2 वचन हथौड़े की तरह दिलों पर प्रभाव डालता है। अंग्रेजी साहित्य में एम. ए पास करने वालों के लिए उनकी लिखित में से कुछ न कुछ पढ़ना आवश्यक होता है। वह उस समय इंगलैंड के (Chancellor of excheqer) खजाना मन्त्री थे, जिस समय कहा जाता था अंग्रेजो के राज में सूरज नहीं छुपता था, अर्थात सारे संसार पर उनका एक छत्र राज्य था। इतने योग्य और उच्च पदधारी संसार प्रसिद्ध पुरुष आखिर जेल गए और बहुत खवार और दुखी हुए। कहने का अर्थ यह है कि मनुष्य बड़ी बड़ी योग्यताएं रखकर, बहुत बड़ी प्रसिद्धि पाकर भी अन्धेरे में आवृत रहता है। इतनी योग्यताओं के धनी को यह पता ही नहीं लग सका कि मुझे जेल जाने की सज़ा होगी। वह अपने बेईमानी के कर्म और व्यवहार की ओर से घोर अन्धकार में ही रहे।

जब इतने बड़े अति योग्य और महान रोशन दिमाग अपने हानि हित के सम्बन्ध में घोर अन्धकार में रह सकते हैं, तो हम जैसे अत्यन्त तुच्छ जीव कैसे अन्धेरे से बच सकते हैं।

आत्म जीवन तत्व शिक्षक परम पूजनीय भगवान देवात्मा ने इस अन्धेरे सम्बन्धी इस प्रकार फरमाया है :–

"प्रत्येक मनुष्य के लिए आवश्यक है कि वह अपने नीच अनुरागों और अपनी नीच घृणाओं के द्वारा प्रेरित होकर नीच गतियां ग्रहण करे और मोह मिथ्या, पाप और अज्ञान आदि के द्वारा अपने आत्मा को नीच, रोगी और दुर्बल बनाए।"

"इसलिए जब तक किसी मनुष्य के आत्मा में किसी उच्च या सात्विक भाव की उत्पत्ति न हो, तब तक वह केवल यही नहीं कि कोई भला करने की (पुण्य) गति करके, उच्च नहीं बनता, बल्कि उसके विरुद्ध अपने एक या दूसरे सम्बन्ध में पतनकारी वा हानि करने वाले भावों के द्वारा प्रेरित होकर अपनी और दूसरों की बहुत बड़ी हानि और अपने आत्मा का पतन करता है।"

"देव धर्म संस्थापक की इस शिक्षा विषयक ज्योति के बिना इस पृथ्वी पर भिन्न भिन्न धर्मो के लाखों और करोड़ों मनुष्य आत्मिक जीवन के विचार से अन्धेरे में पड़े हुए हैं। और ऐसे जनों में वह हज़ारों लोग जो विद्वान, पंडित, दिगम्बर योगी, मौलवी, काजी, पादरी और फुंगी आदि कहलाते हैं, जीवन सम्बन्धी (भले बुरे) विकास, विनाश के तत्व ज्ञान से खाली होकर अपने मिथ्या विश्वासों के द्वारा अपनी और, अन्य अस्तित्वों की

भिन्न – 2 प्रकार से हानि कर रहे हैं।"

अपने सच्चे भले और बुरे से पूर्ण हानि हित से हम प्राय: सारे सेवक सेविका, देव धर्म के प्रचारक, कर्मचारी, पदधारी, देव धर्म के कौंसलर मन्त्री आदि अक्सर बहुत कुछ अन्धेरे में ही रहते हैं और अपनी महा हानि से अभिज्ञ और अनजान ही रह जाते हैं और सारी सारी उमर ही सेवक होने या कर्मचारी होने का, उच्च पद – धारी होने का और इसलिए ठीक और अच्छे और उच्च होने का महा घोर भुलेखा पालते रहते हैं

एक बार एक देव समाज के बहुत पुराने योग्य, वकील (पुराने समय के) कर्मचारी और कौंसलर (प्रबन्ध के मैंबर) पौधों को पानी देकर सेवा का पुण्य का काम अपनी तरफ से कर रहे थे। उनके पास ही एक छोटी उमर का अनपढ़ हल चलाने वाले विकासार्थी (शिक्षार्थी) भी सेवा कर रहा था। विकासार्थी ने बज़ुरग कौंसलर से पूछा कि आप पौधों को पानी देकर अपना भला कर रहे हो, या बुरा। वह स्वभाविक बहस में पड़ गए, फिर वह विकासालय के प्रिंसीपल साहिब के पास गए, जिन्होंने उस विकासार्थी को समझाया कि इस प्रकार बड़ों को प्रश्न न पूछा करो और साथी कौंसलर को उनके अपने भावों के विषय में उनके अन्धकार को अलग समझाया।

हम सब मनुष्यों को अपनी अपनी अन्धकार ग्रस्त अवस्था सम्बन्धी बहुत ही गंभीर होने की आवश्यकता है और इस सम्बन्ध में भयभीत होने की आवश्यकता है। फिकरमन्द होने की आवश्यकता है। क्योंकि अन्धकार में दुख और हानि का होना अवश्म्भावी है। हमारे सच्चे हानि और हित, भले और बुरे का सम्बन्ध हमारी आत्मा से है। हमारे परिचालिक भावों से जुड़ा हुआ है। हमारे व्यवहारों, हमारे विश्वासों, हमारे ख्यालों हमारी चिन्ताओं, गतियों और कर्मों से जुड़ा हुआ है।

मनुष्य की सोच, ख्याल, चिन्ताएं, दृष्टि, बोल वाक्य, बाणी और क्रियाएं ही हमारे सच्चे भले, बुरे को निर्धारित या निर्माण करती हैं।

हमारी जीवन गति, जीवन चाल, हमारा पूर्ण जीवन, हमारा अपने प्रति और पर के प्रति व्यवहार हमारी रूह, जीव आत्मा, लाईफ फोरस, जीवनी शक्ति को प्रभावित करता है। निर्माणकारी, विकासकारी, परस्पर हित प्रद व्यवहार, जीवनी शक्ति के बल में वृद्धि करता है और उसके विपरीत हानि जनक व्यवहार, जीवनी शक्ति, हमारी रूह, जीवन बल का हनन करता, घटाता और नाश करता है।

मनुष्य दो मौतों का शिकार होता है। एक है शारीरिक मौत जिसके विषय में तो हम जानते हैं और दूसरी हमारी जान की मौत, आत्मा की मौत। हममें से बहुत से अपने शारीरिक हानि और मौत, शारीरिक अंगों की हानि, शारीरिक रोगों को तो काफी कुछ जानते हैं, इसका अर्थ है – शारीरिक हानि और मौत से भी बहुत बेसुद्ध और लापरवाह मनुष्य भी बहुगिणती में हैं, परन्तु आत्मा और आत्मा के बहुमूल्य अंगों की हानि, आत्मा वा आत्मा की जान की हानि और मौत को तो कोई ही कोई मनुष्य जान सका है, परन्तु फिर भी उसका सच्चा बोध, विवेक तो नदारद ही कहा जा सकता है। इसके परिणाम स्वरूप करोड़ों, अरबों रूहें आत्मिक अन्धेर में अपना आत्म घात कर रही हैं।

देव समाज के भी अधिकतर जनों को अपने प्रेरक या परिचालक भावों का या सुख लालसाओं का पूरा – पूरा स्प्ष्ट और प्रकृत ज्ञान नहीं होता और नहीं है। वह इस सम्बन्ध में घोर अन्धेरे में हैं, विशेषकर अंह सम्बन्धी सब भावों के और मोह सम्बन्धी भावों के प्रति अनभिज्ञ और अनजान हैं और मनुष्य अपने प्रेरणा स्त्रोतों, अपनी अपनी सब भावनाओं के सम्बन्ध में अन्धकार के साथ ही साधारणत: सन्तुष्ट रहता है। अपने भावों की सोझी वा जाग्रति पाने की भी होश वा जाग्रति

पाना नहीं चाहता। हमारे सुख प्रेम ही हमारी जीवन चाल, Life Style, सोच, चिन्ताएं, बोल, इच्छाएं, कामनाएं और क्रियाओं के स्त्रोत हैं। इसके अनुसार ही उसका बुरा और भला परिणाम निर्धारित होता है। अपनी ऐसी चिन्ताओं और क्रियाओं का कोई विवेक जो नही रखता वह अपने सच्चे हित और हानि से बेसुध है। पूर्ण अन्धकार ग्रस्त है।

मनुष्य सुख लालसाओं का भरपूर स्वामी है। वह नीच सुख अनुरागी और नीच घृणाकारी है। सब सुख अनुराग अन्धेरा पैदा करते हैं। मनुष्य अन्धेरे में ही रहने के लिए मजबूर है। नीच सुख अनुराग मनुष्य को अन्धा, बेसुध, अपना वकील स्वयं बनने, अपना पक्षपाती, कठोर दिल, उल्टा दृष्टा बना लेते हैं। नीच सुख अनुराग मनुष्य के सबसे बड़े दुश्मन हैं। लेकिन वह अपने दुश्मनों को प्यार करता है। इसलिए दुख और हानि को प्राप्त होता रहता है।

मनुष्य की मनोवैज्ञानिक बनावट ही अधूरी है। बेइन्तहा योग्यताएं रखकर भी अधूरा है। और थोड़ी सी अक्ल वा बाहुबल रखकर भी वह अपना अधूरापन नहीं देख सकता। यदि वह अपने किसी नीच सुख को जान भी ले, वह अपने आप उस नीच सुख से मुक्त नहीं हो सकता, आवश्यक उच्च शक्ति वा उच्च अनुराग के बिना वह उससे मुक्त नहीं हो सकता।

तीन पक्षों में वह पूर्ण अधूरा और अक्षमय है : – जब मनुष्य अपने चालक भावों, अपनी चिन्ताओं और क्रियाओं के प्रति अन्धकार में है, इसलिए वह दुख और हानि को प्राप्त होता है। इसी कारण एक एक प्रैज़ीडैंट को, गवर्नर को, मुख्य मन्त्री को, एक – 2 सैंटर के मन्त्री को एक एक विख्यात धार्मिक नेता को, गुरू को, प्रचारक को एक 2 जगत प्रसिद्ध ऐक्टर को, फिलासफर को बड़े – 2 अमीरों को, डाक्टर, इंजनियर तक को पता नहीं लगता कि उनके नीच सुख अनुराग उन्हें जेल तक पहुंचा देंगे।

भयानक परस्पर खाना जंगी है। मिथ्या और पाप द्वारा अरबों रूहें, (विनषृ होते हैं लाखो जन, बिना तुम्हारी ज्योति के) विनष्ट हो रही हैं। इस महानतम ज्योति के विषय में एक भजन में आता है, " अक्लों वाले जिससे खाली, मुल्कों सल्तनतों के वाली, जिस बिन भटके सफल जहान" हम सब सेवक भी कुछ मिथ्या व पाप छोड़कर सन्तुष्ट रहते हैं, पर जब तक परम पूजनीय भगवान के साथ सच्चा सम्बन्ध नहीं बनता और उनके देव प्रभावों तक रसाई नहीं होती, तब तक हमें अपनी इच्छायों, खुशियों, चिन्तायों और क्रियाओं का विनाशकारी रुप नज़र नहीं आ सकता । यह ज्योति ही हमें दिखाती है कि कौन सा सुख, कौन सा रस हमें क्या कुछ बनाता है। उनसे मुक्त होने के लिए हम व्याकुल नही होते। हम आत्मघात करने के राह पर ही पड़े रहते हैं।

अंह और मोह सम्बन्धी नीच अनुरागों का बोध हमें इस अद्वितीय ज्योति में ही हो सकता है। जिस मनुष्य की देव प्रभावों तक रसाई हो जावे, तो उसे संसारिक सुख, साधन धन धरती सन्तुष्ट नहीं कर सकते। सब फीके पड़ जाते हैं। देव प्रभावों के द्वारा ही संसारिकता का कीट बनना नजर आता है और इस झलक से पाप – रुपी बन्धनों को कटते जाना आवश्यक है ।

जैसे पहले बताया है कि मनुष्य का प्रकृत रुप उसकी रुचियों, उसकी पार्टियों, सिनेमा, फेस बुक्स हमारे मनोरंजन, टी.वी. सीरियल, नाच गानों से जुडा हुआ है, हमारे मान सम्मान, पद प्रमुत्व से जुडा हुआ है, जैसे मैसूर के दरियाई रेत में सोने के सूक्षम कण छुपे होते हैं, वह दिखाई नहीं देते, उसी प्रकार हमारी सुख लालसाएं देव ज्योति के बिना हमें दिखाई नहीं देती । इसलिए उसे पाने की अतिशय आवश्यकता है।

– बलदेव सिंह

गहरी सोच की आवश्यकता

आम दुनियां के मनुष्यों को बेशक यह बात अच्छी न लगे, परन्तु गुरू दर के साथ जुड़े होने के कारण, वह इस सचाई से इन्कार नहीं कर सकते कि परम पूजनीय भगवान देवात्मा का आर्विभाव एक अद्वितीय घटना है, और वह मानवता के लिए अति महान और बहुमुल्य वरदान है। नेचर ने क्या मनुष्य या मानवता को सर्वोच्च हित और क्या पशुओं, पेड़ पौधों और निर्जीव जगतों का हित और कल्याण देवात्मा के परम हितकर सम्बन्ध पर निर्भर रखा है। देवात्मा नेचर ने अपने विकासक्रम में इसलिए पैदा किए हैं कि वह समस्त मानवता को मिथ्या, वहमों, कल्पित अन्धे धर्म विश्वासों और कल्पित पूजा, पाठों, जापों, नमाज़, रोजों जैसे अनेक धर्म साधनों के द्वारा, और भिन्न प्रकार के घृणित, अन्याप पाप और अपहरणकारी कर्मो के द्वारा हो रही सदियों से महा भयानक बर्बादी, यहां दुख और नाश से बचा सकें और उन्हें ठोस, सच्चे और शुभ के मार्ग पर डालकर उनका सच्चा और हक़ीकी परम कल्याण करके मानवता को भी और दूसरी कायनात को सच्चे और हक़ीकी स्वर्गी सुखों का वारिस बना सके ।

किसी भी मनुष्य का देवात्मा की शरण को प्राप्त करना परम सौभाग्य है, विशेष कर जो सौभाग्यवान जन इस महा सौभाग्य को सफल कर सकें ।

गुरु महाराज के मिशन को आरम्भ हुए प्राय: 130 वर्ष के लगभग हो चुके हैं । आखिरी 20 – 30 वर्षों को छोड़ लगभग एक सदी का मिशन का इतिहास बहुत ही अद्भुत, अर्थ भरपूर और मानव जीवनों में उच्च परिवर्तनों के अलौकिक कारनामों से भरा हुआ है जिससे साफ और ठोस सबूत मिलता है कि देवात्मा का आर्विभाव सचमुच सारी कायनात का ही परम कल्याण करने वाला है। परन्तु मिशन का यह सुनहरी युग धीरे धीरे पिछले 25 – 30 वर्ष से लगभग लोप होने जैसा ही प्रतीत होता है। ऐसा होना था भी कुदरती । गुरु महाराज और उनके हाथों संवारे जांबाजों की समय के साथ साथ कमी होती गई, उनकी अनुपस्थिती इस कमी का मूलकारण है। यही कमी है कि गुरु मिशन की कोई प्रगति – शील अवस्था के प्रति ज़मीनी सचाई कोई जरा सी भी उत्साहप्रद नहीं है। दिल को गहराई से तोड़ने वाली है। संवेदनशील हृदयों के लिए तो यह बहुत ही लज्जा जनक, शर्मनाक, काला मुंह करने वाली, महा दुखदाई वा डूब मरने वाली है । गुरु मिशन की मुर्दगी या अतिश्री के जिम्मेवार कौन हैं, हम हैं जो गुरु कारज करने का दम भरते हैं और मिशन की बागडोर संभालते हैं।

अंग्रेजों ने राजस्थान जैसे मरुस्थल के टिब्बों, रेत के टीलों के एक इलाके में नहर निकाल दी थी वह धरती सोना उगलने लगी। गन्ना, कपाह, गेंहू और कई फसलों की बहार आ गई। परन्तु इलाके के मूर्ख लोगों ने प्रार्थना करके नहर बन्द करवा दी कि हमसे नहर के पानी का टैक्स नहीं दिया जाएगा। आखिर अंग्रेज ने पानी बन्द कर दिया। ईलाका फिर रेगिस्तान बन गया।

देवात्मा का मिशन देवात्मा के देव प्रभावों के द्वारा ही सींचा जाता है, तब ही यह लहलाता है। उनके देव प्रभावों के बिना इसका फिर कोरे स्वार्थ, नीचता, मिथ्या, वहम, ज़हालत की ओर चले जाना अनिवार्य है।

देवात्मा के महा दुर्लभ देव प्रभावों को पाने वाले (श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी महाराज जैसे) पुजारियों की अतिशय आवश्यकता है। सत्य तो यह है

कि हम देवात्मा के पुजारी नहीं बन सके या पुजारी बनने के लिए पूर्णता अयोग्य हैं। देवात्मा के पुजारियों का पूरी तरह आकाल पड़ गया है। बिना देवात्मा की पूजा के हमारे अपने जीवनों में ही नीचता के अम्बार हैं, फिर हम महा कोढ़ी मिशन की क्या सुध ले सकते हैं।

देवात्मा की पूजा संसार भर के अति कठिन कामों में से एक है। देवात्मा को अकल से जानना कोई मुश्किल काम नहीं है परन्तु देवात्मा को पहचानना अति कठिन है, हां अधिकतर जनों के लिए तो यह सम्भव ही नही हो सकता।

देवात्मा की पूजा बहुत सहज नहीं है, यह काफी तप और त्याग मांगती है। यह पूजा इसलिए भी बहुत मुश्किल बन रही है कि एक तो स्वयं गुरु महाराज वर्तमान नहीं, जो मनुष्य को कान से पकड कर सही मार्ग दिखा सकें, न ही कोई बजुरग, अनुभवी और तजरबेकार, हमारे से बड़ा कोई गाईड माने जाने वाला हमारी सबकी श्रद्धा का पात्र धर्म सम्बन्धी दिख रहा है जिससे हम अपने आपको असमर्थ जानकर निस्कोंच रहबरी लेने के लिए हमारे हृदय खुशी खुशी तैयार हो सकते हैं। ऐसी परिस्थिति में हम आपोधापी हाथ पैर मारने के लिए मजबूर हैं।

देवात्मा की पूजा, मनुष्य की नीच सुखों में ग्रस्त प्रकृति के अनुकूल नहीं। हमें नीच सुखों ने नकेल पाई हुई है, हमें इसमें ही सुख प्राप्त होता है। देवात्मा की पूजा, हमारे नीच सुख, मूर्खो और भटकों हुओं का खेल ही दिखाते हैं। पर हमारे नीच सुख अपनी तृप्ति के लिए जो कुछ लूट व अपहरण कर सकते हैं, वह इसी में हमारा लाभ दिखाते हैं– हम उसी में रत रहने में ही अपनी चतुराई देखते हैं। ऐसी मनुष्य प्रकृति की परिस्थिति में देव आत्मा की पूजा तो सोच–मात्र ही असम्भव है।

हमारे नीच सुख हमें अन्धा और महा स्वार्थी बनने के लिए मजबूर करते हैं। देवात्मा के मिशन से प्राप्त बरकतों ने हमें और कईयों की कई कई नस्लों को मिथ्या और पापाचार की प्रचंड आग से निकालकर क्या क्या सोझी, शिक्षा, सम्पन्नता और सुखों से भरपूर किया है। वह सब हम अपनी निजी योग्यता समझकर हज़म कर चुके हैं। गुरु मिशन का चमन झाडियों और कांटेदार वृक्षों से भर रहा है, हमें उसके प्रति अपनी कोई जिम्मेवारी नहीं दिखाई देती। हम अन्धे, मूर्ख, रोगी, वृद्ध माता के महा कृत्घन, महा स्वार्थी, निर्लज, बेटों की तरह अन्धे, खुश प्रसन्न फिर रहे हैं। हमें गुरु के उजड़ते चमन का न कोई ख्याल है और न कोई दुख है।

फर्ज़ तो क्या दिखाई और महसूस होना था, पूजा तो कितनी दूर की बात है। सुख अनुरागी प्रकृति बड़ी दोष पूर्ण है और रहती है। हमारे में से कुछ साथी लोग अपने गुरु मिशन का काम करने के संग्राम में लगे हुए हैं। वह अपने आप में खुश और तृप्त वा सन्तुष्ट हैं, क्यों जो हमारी सुख अनुरागी प्राकृति सदा हमें अपने आपको ठीक दिखाती है। मैं तो पूरा ठीक हूं। मेरा काम और संग्राम ठीक। मेरे भीतर कोई भी दोष नहीं हो सकता। दोष दूसरों में स्पष्ट हैं। बहुत दफा हम जिसको गुरु मिशन की सच्ची सेवा समझते हैं उससे मिशन की बड़ी हानि होती है। नीचे लिखे एक पत्र का पाठ शायद कुछ होश दे सके, जो एक कारज कर्ता ने गुरु महाराज की वर्तमानता में उनकी सेवा में लिखा था ।.....

विरोधियों के अलावा, उन जनों से भी, जो आपके कहलाते हैं, घोर और लगातार दुख उठाने और फिर भी उनका कल्याण चाहने और करने वाले श्री देवगुरु भगवन्!

मैंने आपको अपनी नीच और दुष्ट प्रकृति के कारण जो 2 घोर दुख दिए हैं, और आपके महा हितकर कार्य को जो 2 हानियां पहुँचाई हैं, वह जब आपकी ही देव ज्योति में मेरे सन्मुख आती हैं, तब मेरे दिल को हैरानी और शोक से भर देती हैं। हैरानी से इसलिए कि मैं अपनी अन्धता के कारण अपनी उलटी गति को सीधी, और आप को जो मेरी सचमुख की उलटी गति को मुझ पर उलटी हि गति प्रकाश करते थे, गलती पर और अपने आपको सही समझता था, और हक़ीक़त में आपके महान उच्च कार्य के लिए हानिकारक होकर भी अपने आपको उसकी उन्नति करने वाला अनुभव करता था! ओह! इस घोर अन्धता और पागलपन की हालत में मैं आप के और अन्यान्य अस्तित्वों, और आप के कार्य के लिए महा हानिकारक और दुखदाई बन रहा था। उस अन्धता के समय जब आप अपने हित भाव से परिचालित होकर मुझ पर मेरी उन विनाशकारी गतियों को प्रगट करते, और उनसे मुझे मोड़ने का यत्न करते, तब मुझे आप ज़हर की तरह मालूम होते थे, और मेरा दिल चाहता था, कि मैं आपका मुंह तक न देखूं। और उस समय जो जन मेरी किसी उलटी गति को ठीक बतलाते और उस में सहायता करते, वह मुझे सही रास्ते पर और आकर्षणीय प्रतीत होते। इस प्रकार स्वेच्छाचारिता के नशे से पागल होकर मैं दौड़ता – 2 आखिरकार आप भी दुखों के ऐसे कुएं में जा गिरा, कि जिस में घोर अन्धकार और कष्ट के सिवाय और कुछ न था। इस कुएं में गिर कर और वहां के दुखों से अति पीड़ित होकर और आपकी देव ज्योति में अपनी उम्मेद के बरख़िलाफ़, अपने चारों और निराशाओं की काली घटाएं देखकर मुझे कुछ – 2 यह होश आई, कि ओह! मेरा रास्ता ठीक न था, और जो मुझे, इस रास्ते से हटाते थे, वही ठीक थे, और मैं गलती पर था। ऐसी महा शोचनीय अवस्था में मुझे आपके परम हितकर दरबार के भिन्न कोई और सहारा नज़र न आया। हे मेरे परम उद्धार कर्ता भगवन्! मैंने अपनी इस जहन्नुमी और दुखिया हालत में आप को पुकारा, और आपने मुझ नीच से इतने दुख पाकर और हानियां उठाकर और अपने पवित्र और कोमल हृदय पर मुझ दुष्ट और अबोधी की नाना नीच क्रियाओं से अगणित आघात् खाकर भी, अपने महा प्रबल हित भाव के अधीन होने के कारण मेरी ओर से पहुंचाई हुई तकलीफों की परवाह न करके, अपनी दया और मदद का हाथ मुझ तक बढ़ाया, और मेरी अवस्था के अनुसार मुझे उस घोर नरक कुंड से निकालने की कोशिश की, और जितना मैंने अपना हाथ आपको पकड़ाया और जितना मेरे लिए निकलना सम्भव था, उतना आपने मुझे उसमें से निकाल लिया, और आगे भी निकालने के लिए संग्राम कर रहे हैं। ओह! आपका देवरुप कितना महान्! ऐसा हो, कि मैं आपके इस महान् और परम हितकारी रूप की महिमा को भली भान्त उपलब्ध कर सकूं, और उस पर हमेशा के लिए बलिहार हो सकूं।

गाफिल मत रह

हे मनुष्य, तू केवल शरीर नहीं है, तू आत्मा है। तेरा यह स्थूल शरीर एक दिन छिन्न-भिन्न हो जायेगा। शारीरिक सुखों के लाभ करने में हि तू अपनी उम्र बर्बाद न कर, क्योंकि जैसे तेरा यह शरीर यहां का यहां ही रह जायेगा, वैसे हि उसके सुख के विषय भी यहीं के यहीं रह जाएंगे। यहां से कूच करते समय उनमें से तेरे साथ कुछ नहीं जायेगा। फिर तू आप हि सोच, कि ऐसी सौदागरी में क्या लाभ होगा। यदि तू किसी दूसरे देश में धन कमाने के लिये गया हो और रात दिन सख्त मेहनत करके तूने जिस कदर धन कमाया हो, वह यदि उस देश के कानून के अनुसार जिस समय तू उस देश से अपने घर को आने लगे,तो सब कुछ तुझ से छीन लिया जाये, तो तू आप ही बतला कि तेरे दिल पर कैसा सदमा लगेगा, क्या उस समय तेरी छाती फट नहीं जाएगी और क्या तू उस समय रोकर यह नहीं कह उठेगा, कि लो अगर मै जानता, कि मेरी सारी उम्र की कमाई आखिरकार मुझ से यूं हाथों हाथ छिन जायेगी, तो क्यों ऐसी सख्त तकलीफ उठाता और क्यों रात दिन उसी के इक्ट्ठा करने में उम्र बर्बाद करता? आँख खोलकर देख ले, इस दुनियां में दुनियावी दौलत की सौदागरी का यही हाल है। तू जिस कदर यहां की दौलत कमाता हैं, वह यहां के कानून के अनुसार इस दुनियां से कूच करते समय यहीं की यहीं छोड़नी पड़ेगी। देख! तुझ से पहले जितने लोग आज तक इस दुनियां से कूच कर गए हैं, उनके साथ क्या बर्ताव होता रहा है। फिर यह सब कुछ देख सुनकर भी क्यों अन्धा और बहरा बनता है। अब भी मौका है, होश कर और इस दुनियां का कीड़ा मत बन। उस सच्ची आत्मिक दौलत के कमाने का भी फिक्र कर, जो तेरे यहां भी काम आएगी और यहां पर भी तुझे आराम देगी और यहां से कूच करते समय तेरे साथ भी जाएगी। तब मुबारक हैं वह जन, जो मनुष्य जन्म पाकर आत्मिक दौलत के कमाने में गफ़लत नहीं करते और यहां से कूच करते समय न केवल अपनी उम्र बर्बाद करके रोते नहीं देखे जाते, किन्तु दिली शान्ति और तसल्ली के साथ यहां से रवाना होते हैं।

2. उपरोक्त लेख के पाठ से मेरे भीतर एक तरफ परम पूजनीय भगवान की अन्य पुस्तकों के पाठ की आकांक्षा पैदा हो गई और दूसरी तरफ इसके साथ ही सांसारिक पदार्थों और शारीरिक सुखों की प्राप्ति की आकांक्षा पर चोट लगने से वह आकांक्षा भी नामालूम तौर से कुछ मद्धम व ढीली हो गई। और उसका फल यह हुआ कि मैं और तरफों से अपना ध्यान हटा कर श्री देवगुरु भगवान् के लेखों का पाठ करने के लिये समय निकाल लेता और ऐसी पुस्तकों के पाठ से मेरा दिल लग जाता। मैं शब्दों में बयान नही कर सकता, कि इसके अनन्तर पहले पहल जब मैने परम पूजनीय भगवान् के एक लेख का पाठ किया, तब उसके पाठ से मेरे दिल पर कैसा जादू का असर हुआ और मैं फिर वैसे लेखों के पाठ करने का किस कदर आकांक्षी बन गया। उस लेख का पाठ करके मै इस बात को सामने लाकर बहुत अफसोस किया करता था, कि ऐसे-ऐसे कीमती और उच्च लेख इस दुनियां में मौजूद थे और शोक! कि मैं उनके पाठ से वंचित रहा। जिस पुस्तक में यह लेख थे, उस पुस्तक को, जिनसे वह पुस्तक मुझे मिली थी, उनको और जिन्होंने ऐसे लेख लिख कर छाप दिये, उन लेखों के लेखक परम पूजनीय भगवान् को मैं जिस दृष्टि से देखता था, वह मैं केवल अनुभव करता था, बयान नहीं कर सकता। उस लेख के जिस भाग ने मेरे दिल पर विशेष रूप से जादू का असर करके मुझे उस प्रकार के लेखों

के पाठ का अधिक आकांक्षी बना दिया, वह यह था : -

'इस दुनिया में मनुष्य के लिये आखिरकार एक दिन ऐसा समय आ जाता है, कि जब सचमुच इन्सान की सारी उम्मीदें टूट जाती हैं, और भीतर और बाहर चारों तरफ अन्धेरा ही अन्धेरा दिखाई देता है। कोई यार, कोई मददगार नज़र नही आता। देखने को दुनिया आदमियों से भरी पड़ी है - भाई हैं, दोस्त हैं, बीवी है, बच्चे हैं - तो भी कोई अपना नहीं। किसी से मदद की उम्मीद नहीं रहती। गोया सारी दुनिया जवाब देती है। जो चीज़ सामने आती है, उसी पर यह शब्द मोटे अक्षरों में लिखे मिलते है, 'मैं तुम्हारी नहीं'। कैसी खौफनाक हालत! पहले सैकड़ों चीज़ों पर भरोसा था, इसलिये उम्मीद बन्धी हुई थी, परन्तु थोड़ी सी देर में यह निराशा और कोई सहारा न रहना, सारी चीज़ों का मुँह मोड़ लेना, एक दम से किनारा कर लेना, झट - पट बेवफा हो जाना, कैसा दुखदाई है? वह बार - बार उन चीज़ों की तरफ देखता है और समझता है, कि शायद यह धोखा नही देती हैं, मै खुद ही धोखा खाता हूं, भला अपनी चीजें बेगानी किस तरह हो सकती हैं! दस वर्ष, बीस वर्ष जिन चीजों को अपना समझता रहा हूं, एक पल के भीतर यह सब पराई क्यों कर हो सकती हैं? मैं शायद ख्वाब देखता हूं, मेरी अक्ल शायद ठिकाने नहीं है। यह सोचकर फिर हर चीज़ के नजदीक जाता है और बहुत तवज्जोह से हर एक चीज़ की तरफ नजर डालता है। मगर देखता क्या है, वचन वही हैं, शब्द वही हैं, "मै तुम्हारी नहीं जाओ - जाओ, मैं तुम्हारी नहीं।' क्या खौफनाक जवाब मिलता है, क्या दिल के तोडने वाली आवाज़ निकलती है। कोई चीज़ सहारा नहीं देती, कोई चीज़ तसल्ली नहीं देती, किसी जगह शान्ति नहीं मिलती। कैसा अंधेरा! कैसी घबराहट!! कैसी बेचैनी!!! सारी उम्मीदें टूट जाती हैं। जिन्दगी बवाल मालूम होती है। अपने आपको लानत करता है, धिक्कारता है। कहता है, काश कि मै पैदा न होता? काश कि इस दुनिया में न आता, काश कि मैं जिन्दगी हासिल न करता? यह जिन्दगी नहीं मौत है, मौत से भी बदतर है। बाहर से निराशा, भीतर से निराश, बाहर से दुनिया की हर एक चीज़ जवाब देती है, भीतर के पाप की आग दिल को जलाती है। हाय! शारीरिक सुखों के लिये दुनिया का गुलाम होना कैसा दु:खदायी है?

एक सेवक

सूचना

धर्म जीवन सम्बंधी हर प्रकार की जानकारी के लिए, चंदा आदि भेजने , कोई मैटर आदि भेजने के लिए साथ लिखे पते पर सम्पर्क करें या लिखें। : -

श्रीमान बलदेव सिंह जी,

House No. 3154, Sector 21-D, Chandigarh - 160 022

Phone : 0172 -2716914

अन्ध विश्वासों का श्राप

यूं तो हम वैज्ञानिक युग में जी रहे हैं, परन्तु विज्ञान को वहीं तक स्वीकार करते हैं जहां तक उसके द्वारा अविष्कार की हुई सुख सुविधाएं हमें प्राप्त हों, हमारे विश्वास इससे आगे हमें सोचने नहीं देते। हमारे देश का यह बहुत बड़ा दुर्भाग्य है कि दिन पर दिन मिथ्या वा अन्ध विश्वासों का घेरा बढ़ता जा रहा है। इसमें अनपढ़ ही नहीं पढ़े लिखे, जहां तक कि सांईस पढ़े हुए जन भी बुरी तरह लिप्त हैं। इसी के कारण है कि हमारे देश में बाबाओं, महाराजों, सन्तों की गिणती बढ़ती जा रही हैं। पेपरों में भविष्य वाणियां, साधु सन्तों के विषय में प्रचार, टी.वी. शो शुरू होते हैं, तो ठीक होते हैं, धीरे–2 प्राय: हर शो में भूत प्रेत, इन्सान का सांप का रूप धारणा, वशीकरण मन्त्र, काला जादू, तांत्रिक विद्या का धड़ल्ले से प्रचार हो रहा है। पिछले दिनों में निर्मल बाबा का 5–7 मिन्ट प्रोग्राम देखा, सैकड़ों की गिणती में लोग बैठे हैं। एक–2 जन उठता है, बताता है मेरा काम नहीं चल रहा, घर में कलह कलेश रहता है, लड़की की शादी नहीं होती आदि समस्याएं बताते हैं। बाबा जी हाथ ऊपर करके आर्शीवाद देते हैं, अगर समस्या बड़ी है, ठीक कैसे हो। जितनी बड़ी समस्या उतने ज़्यादा पैसे। इन मिथ्याचारी ढोंगीयों के लिए टी.वी. वाले हर रोज़ समय देते हैं, परन्तु यदि कोई सच्चे धर्म की, मानवता की सेवा की बात करना चाहते हैं, तो उनके पास समय नहीं है। निर्मल बाबा के एजेंट बार–बार Announce करते हैं कि उनके यह अकाउंट नं. हैं गरीब लोग उनके झांसे में आकर अपना पेट बांधकर उसमें पैसे जमा करवाते हैं। कितना बड़ा छल !

एक छोटी सी पत्रिका ईसाईयों की पढ़ी, वही बात फलां ने ईसा मसीह पर विश्वास किया उसके पैर चलने लग गए, किसी का Business चल पड़ा, उन लोगों के नाम भी लिखे हैं। ताकि लोगों को यकीन हो जाए। भोली भाली दुखों की मारी जनता, इन पाखंडियों पर विश्वास करके अपनी मेहनत की कमाई उन पर लुटाते रहते हैं।

इन ढ़ोगों को मनुष्य ने धर्म समझ रखा है। आजकल मैडीटेशन ने पढ़े लिखे लोगों को गुमराह किया हुआ हो। एक बहुत पढ़ी लिखी लड़की से बात हुई जो सांईस की भी विद्यार्थी रही है, आखिर मैडीटेशन में आप किस के साथ योग करते हैं, तो उसने बताया कि नेचर वा ब्रह्मांड से परे कोई शक्ति है, जिसके साथ योग करके तुम्हें शान्ति मिलती है। अब सांईस कहती है कि नेचर से परे कोई अस्तित्व नहीं हो सकता, यह बात समझ में आनी ही कठिन है। अवश्य मैडीटेशन में कुछ अच्छी बातें भी सोचते हों, परन्तु गैर सांईसी विचार कभी सच्चे नहीं हो सकते। अपने आपको बदलने के लिए अपनी परिचालक शक्तियों को जानना आवश्यक है। हमें कौन से भाव चलाते हैं, किन–2 नीच भावों से निकलने और किन किन नीच भावों को बढ़ाने की आवश्यकता है। पर यह बात जानने के लिए जिस अद्वितीय ज्योति की आवश्यकता है, वह किसी के पास नहीं है।

हैरानी होती है कि इन धार्मिक पाखंडियों ने लोगों के दिमागों पर ताले लगा दिए हैं। वहां तर्क की कोई गुंजाईश ही नहीं। क्या सम्भव है और क्या असम्भव है, इसको सोचने की आवश्यकता ही महसूस नहीं होती । यह बात भी समझ नहीं आती कि यह बाबा लोग गरीबों के धन पर ऐश कर रहे हैं, परन्तु गरीब रोटी रोज़ी के मोहताज हैं। यह भी सोच नहीं कि बाबाओं, साधुओं, गुरूओं की गिणती दिन पर दिन बढ़ती जा रही, उसी मिकदार से पापों और गुनाहों, अत्याचारों, बलात्कारों की गिणती बढ़ रही है। यदि उनमें कोई

बाकि पृष्ठ 15

नही खाएंगे तो ज्यादा जिएंगे

(मेनका गांधी)

साच्यूसेट्स के फैमिंघम हार्ट स्टडी के डॉ. विलियम कास्टली के अनुसार, अक्सर हम शाकाहारी लोगों पर चिल्लाते हैं। उन्हें बेवकूफ कहते हैं, लेकिन सच्चाई यह है कि वह हमसे बेहतर काम कर रहे हैं।

यहां तक कि लैक्टो- ओवो- वेजेटेरियन, ऐसे लोग जो अंडे और दूध का सेवन करते हैं, कम मांस खाने वालों की तुलना में लगभग तीन वर्ष अधिक जीते हैं। उदाहरण के तौर पर, हृदय रोगों से मरने वाले शाकाहारियों की संख्या मात्र 14 प्रतिशत है। निरस्संदेह शाकाहारियों को भी हृदय रोग होते हैं, पर उनके जीवन में यह परेशानी मांसाहारियों के मुकाबले लगभग बीस साल बाद आती है। यह एक बड़ा अंतर है और शाकाहारी लोग ज्यादा सेहतमंद और फिट जिंदगी जीते हैं और कम बिमार पड़ते है,

यहां तक कि स्वास्थ्य में पोषण के महत्व को धीमी गति से खोज रहे डाक्टर भी लगभग सौ वर्षो से संचित किए गए वैज्ञानिक प्रमाण के सामने झुक गए हैं और उसे स्वीकार कर रहे हैं। ब्रिटेन मेडिकल एसोसिएशन की रिपोर्ट के अनुसार, शाकाहारियों की उम्र मांसाहारियों की तुलना से ज्यादा होती है। रिपोर्ट का निष्कर्ष है कि शाकाहारियों में हृदय रोगों से मरने की आशंका 28 प्रतिशत कम होती है, और साथ ही कैंसर से मरने का खतरा भी 39 प्रतिशत कम होता है।

ये आंकड़े ब्रिटेन मूल के 5,015 मांस का सेवन करने वाले और 6,115 मांस का सेवन न करने वाले लोगों पर किए गए 12 वर्षो के एक शोध पर आधारित थे। इस नियंत्रित शोध में रहन-सहन की परिस्थितियों के प्रभाव, समाजिक स्तर, वजन, नौकरी से जुड़ी परेशानियों और धुम्रपान के प्रभावों पर चर्चा हुई और अंत में मांसाहार पर सवाल खड़े किए गए, लेकिन ब्रिटिश शोध की अजीब बात यह थी कि इसके लेखक ने कहा कि वे अभी तक इस बात का पता लगाने में असमर्थ है कि असल में शाकाहारी लोगों के खाने में ऐसा क्या है, जो उन्हें दीर्घायु बनाता है। यह बहुत आश्चर्य की बात है। सवाल यह नहीं है कि उनके खाने में ऐसा क्या होता है, बल्कि सवाल यह है कि क्या नहीं होता? जो नहीं होता वह है मांस।

वैज्ञानिक अपने प्रयोगों के निहितार्थ का सामना करने से मना करके स्वंय को मूर्ख बनाते हैं। अब उन्हें जो सवाल करना चाहिए वह है कि मांस में ऐसा क्या है, जो हमारे लिए जानलेवा साबित हो सकता है? जबाव है, इन्सानों की शारीरिक बनावट, इसके हिसाब से नहीं बनी है, इसलिए यह ज़हर बन जाता है। अमेरिका के नेशनल कैंसर इंस्टीट्यूट के डायरेक्टर आर्थर अप्टॉन के अनुसार, हर प्रकार के कैंसर के लगभग 50 प्रतिशत के लिए आहार जिम्मेदार होता है। कोलोन कैंसर इसका संकेत है, क्योकि यह वही होता है, जहां पाचन संबंधी समस्यांए सामने आती हैं। कुछ आंकड़े हैं।

विश्व की वह जनसंख्या, जो मांस का सेवन ज्यादा करती हो और उनमें कोलोन कैंसर से जुड़े मामले ज्यादा न हों - ऐसा कोई जनसंख्या समूह नहीं है।

विश्व की वह जनसंख्या, जो मांस का सेवन कम करती हो और अनमें कोलोन कैंसर होने की आशंका कम हो - ऐसा कोई जनसंख्या समूह नहीं है।

ऐसी महिलाएं, जो हफते में एक बार से भी कम मांस का सेवन करती है, उनकी तुलना में मांस का सेवन रोज करने वाली महिलाओं को स्तन कैंसर होने का खतरा चौगुना होता है।

वे महिलाएं जो हफते में एक बार से भी कम अंडा खाती हैं, उनकी तुलना में प्रतिदिन अंडा खाने वाली महिलाओं को स्तन कैंसर होने की आशंका तिगुनी होती है।

वे महिलाएं जो मक्खन या दूध से बनी वस्तुओं का सेवन हफते में एक या उससे भी कम करती हैं, उनकी तुलना में, वे जो इन खाद्य पदार्थो का सेवन हफते में तीन बार या उससे भी ज्यादा करती हैं, उन्हें स्तन कैंसर होने का खतरा तीन गुना ज्यादा होता है।

वे महिलाएं, जो हफते में एक बार या उससे भी कम अंडे का सेवन करती हैं, उनकी तुलना में जो महिलाएं अंडे का सेवन रोज करती हैं, उनमें गर्भाशय कैंसर होने की आशंका तिगुनी होती है।

जो पुरुष अंडा, मक्खन, मांस और दूध का सेवन रोजाना करते है, उन्हें प्रोस्टेट कैंसर होने का खतरा उन पुरुषों की तुलना में साढ़े तीन गुना ज्यादा होता है, जो इन चीजों का सेवन कभी – कभी या न के बराबर करते हैं।

एक औसत शाकाहारी व्यक्ति को ह्रदय रोग से मृत्यु का खतरा 5 प्रतिशत होता है।

एक औसत शुद्ध शाकाहारी व्यक्ति को ह्रदय रोग होने की संभावना को कम करने के लिए, अंडे, मांस और दूध का सेवन दस प्रतिशत कम कर दिया है, और आपको ह्रदय रोग होने की संभावना को कम करने के लिए अंडे, मांस और दूध का सेवन 50 प्रतिशत कम कर दिया है, तो आपको ह्रदय रोग न होने की संभावना 45 प्रतिशत है।

अगर आपने ह्रदय रोग होने की संभावना को कम करने के लिए अंडे, मांस और दूध का संवन सौ प्रतिशत कम कर दिया है, तो आपको ह्रदय रोग न होने की संभावना 90 प्रतिशत है।

रोज एक अंडा खाने से खून में कॉलेस्ट्रॉल की मात्रा में लगभग 12 प्रतिशत की बढ़ोतरी होती है।

खून में कॉलेस्ट्रॉल की मात्रा 12 प्रतिशत बढ़ने से दिल के दौरे का खतरा 24 प्रतिशत बढ़ जाता है।

मांस, डेयरी और अंडे से जुड़े उद्योगों का कहना है कि जब तक आपके खून में कॉलेस्ट्रॉल का स्तर समान्य है, तब चिंता की बात नहीं है, लेकिन खून में इसी कॉलेस्ट्रॉल के सामान्य रहने के बाद भी, धमनियों के अवरुद्ध होने से मरने का खतरा सिर्फ 5 प्रतिशत होता है। प्रॉब्लम्स विद मीट के लेखक जॉन शैरफेनबर्ग ने लेमन एंड वालडेन (जोएएमए, 1969, 18:950) के द्वारा उपलब्ध कराए गए एपिडेमियोलॉजिकल डाटा के आधार पर बताया कि स्वस्थ और दीर्घायु होने के लिए शाकाहारी भोजन सर्वश्रेष्ठ है। सामान्यत: शाकाहारियों की उमर मांसाहारियों से 6 साल ज्यादा होती है। निश्चित तौर पर, जब आप जिंदगी को खत्म नहीं करने वाली, लेकिन आपको दुर्बल बना देने वाली बीमारियों जैसे दिल का दौरा, मोटापा, कमजोर सहनशक्ति आदि का सामना करते हैं, आपके जीवन की गुणवत्ता घट जाती है।

अमेरिका के श्रेष्ठ 4,000 डॉक्टरों के एक समूह, फिजीशियन कमेटी फॉर रेस्पॉन्सिबल मेडिसिन ने हाल में अपने चार फूड चार्ट जारी किए, जो मांस और डेयरी इंडस्ट्री के प्रति उनकी झुंझलाहट का नतीजा था। उन्होंने अपने चार्ट में बताया कि मूल आहार में: सभी अनाज, सब्जियां, दालें और फल आते हैं। इसके साथ ही, इस चार्ट में यह भी दिखाया गया था कि मांस और दूध से बने उत्पादों का प्रयोग पोषण के लिए जरूरी नहीं है। पीसीआरएम का यह भी मानना है कि इनका जितना कम प्रयोग हम अपने जीवन में करें, यह हमारे लिए उतना ही अच्छा है। इनमें से कई चिकित्सक अपने न्यूट्रिशनल शोधों से प्रेरित होकर खुद भी शाकाहारी बन गए हैं।

प्रेरणा स्त्रोत

80 साल की उम्र में पत्नी के लिए खरीदी डायमंड रिंग

प्रेम की अनुभुति उसे ही होती है, जो उसका महत्व समझता है और महसूस करता है। ऐसे ही है चीन का यह दंपती। इनमें 80 साल के बुजुर्ग को चीन में मोस्ट रोमांटिक मैन कहा जा रहा है। ऐसा इसलिए क्योंकि उन्होनें इस उम्र में पत्नी को हीरे की अंगूठी खरीदकर पहनाई है। यह फोटो इंटरनेट पर जारी होने के बाद वायरल हो गई है। खासतौर से सोशल नेटवर्किंग वेबसाईटों पर।

शिनजियांग इंटरनेट कम्पनी ने उनकी कहानी में दिलचस्पी दिखाई। उनका व्यक्ति उस दुकान पर पहुँच गया, यहां से दंपति ने रिंग खरीदी थी। वहां के स्टाफ मेबर झाऊ लनलान ने बताया कि दोनों दोपहर के वक्त आए थे। बुजुर्ग ने ठीक ठाक कीमत में डायमंड रिंग मांगी थी। ऐसे में उन्हें स्पेशल ऑफर वाली रिंग दी गई। उसके बदले में उन्होने काफी संख्या में छोटे नोट देकर भुगतान किया था। इससे हमें अहसास हुआ कि शायद यह उनकी जीवन भर की बचत रही होगी। वे कह रहे थे कि जीवनभर संघर्ष करने के बाद अब पत्नी को खुश करना चाहता हूँ, इसीलिए उसे अंगूठी दे रहा हूं कि यह उसे पसंद आएगी।

झाऊ ने उनकी तस्वीरें लेकर उसे इंटरनेट पर अपलोड किया था, ताकि अन्य दंपति भी उनसे प्रेरणा ले सकें। चीनी सोशल साइट वीबो पर एक यूजर ने लिखा कि यह फोटो देखकर उसका मन भर गया और आंसू आ गए थे, क्योंकि यही सच्चा प्रेम है। एक अन्य यूजर ने लिखा कि यही सबसे श्रेष्ठ रोमांटिक पल है, मैं उनकी बेहतर जिंदगी के लिए प्रार्थना करुँगा।

निजी दुख से उबार सकता है बड़ा उद्देशय

वे एक सब्जी बेचने वाले थे। स्वंय और परिवार दोनों स्तरों पर संघर्ष की स्थिति थी। जैसा कि अधिकांश निम्न मध्यमवर्गीय परिवारों में होता है। फिर भी मोटे तौर पर सब कुछ ठीक ठाक चल रहा था। रात दिन काम करके उन्होने सड़क किनारे सब्जी बेचने वाले से मुंबई के उपनगर अंधेरी में एक पॉश हॉउसिंग कॉलोनी के कोने पर स्टॉल खोलने तक का सफर तय किया। किंतु वह यह भी जानते थे कि संकटपूर्ण आर्थिक स्थिति से निकलने के लिए बच्चों को पढ़ाना है ताकि उन्हें कभी वह काम नहीं करना पड़े, जो उन्हें करना पड रहा है। उन्होने बच्चों को अच्छी शिक्षा दी। साथ ही वह मूल्य भी दिए, जिनसे वह अपने कम पैसों में काम चलाने के इस जीवन को भूलें नहीं। उनकी उमीद 16 साल के बेटे प्रकाश ने और बढ़ा दी थी। उसने स्कूल की परीक्षा उच्छे अंकों से पास की और कॉलेज में प्रवेश करने जा रहा था। अंग्रेजी माध्यम के स्कूल से पढ़ाई करने वाला परिवार में वह पहला था। वह न सिर्फ परिवार की पहली संतान था। बल्कि कॉलेज जाने वाला और ग्रेजुएट होने वाला भी पहला सदस्य बन जाता। निश्चित रुप से वह प्रतिभाशाली, होशियार और जीवन के प्रति उत्साह से भरपूर लडका था। कुल – मिलाकर प्रकाश से परिवार को बहुत उमीदें थी।

28 जुलाई 2015 को प्रकाश अपने चचेरे भाई राम के साथ बाईक की पिछली सीट पर बैठकर मुंबई के एक उपनगर के एक प्रतिष्ठित कॉलेज में प्रवेश लेने गया था। भाई उसकी मदद के लिए साथ था। वे घर लौट रहे थे। जोरदार बारिश हुई थी और सड़क पर पानी भरा हुआ था। अचानक बाइक पानी में डूबे गड्ढ़े में उतरकर गिर गई और प्रकाश तथा राम दोनों हवा में उठ गए। प्रकाश मुँह के बल गिरा उसका पूरा चेहरा लहूलुहान हो गया। उसे नजदीक के अस्पताल ले जाया गया, जहां उसे मृत घोषित कर दिया गया। गभीर चोटों के कारण राम की जान गई। इस दुर्घटना ने प्रकाश के परिवार में सबकुछ बदल दिया। इस मामले में नगरीय प्रशासन और बिजली कंपनियों के कर्मचारियों के खिलाफ एफआईआर दर्ज की गई, जिन्होंनें वहां गड्ढ़ा खोदा था और बिना कोई सुरक्षा उपाय किए उसे खुला छोड़ दिया। इन लोगों को गिरफ्तार किया गया और फिर जमानत पर रिहा कर दिया गया।

अब आगे आ जाते हैं फरवरी 2016 में। प्रकाश के पिता दादाराव भिलोरे हमेशा तीन स्थानों पर देखे जाते हैं– अधिकतर अपनी दुकान पर और हर एक दिन छोड़कर पुलिस स्टेशन में। जहां वह यह पता करने जाते है कि चार्जशीट दायर करने की क्या स्थिति है, क्योंकि वे नहीं चाहते कि उनकी तरह और भी कोई परिवार उन हालात से गुजरे जिससे उनका परिवार गुजर रहा है। तीसरी और सबसे अहम जगह है– सड़क के गड्ढ़े के आस पास। अगर आप उन्हें नहीं जानते हैं तो आपको लगेगा कि यह कोई ऐसा आदमी है, जिसके पास कोई काम नहीं है या यह कॉन्ट्रेक्टर का कर्मचारी है। जहां भी उन्हें गड्ढ़ा नजर आता है वे उसे आसपास की कंस्टक्शन साइट से टूटे हुए पेवर ब्लॉक और मलबा लाकर भी भर देते हैं। गड्ढ़े को भरने के बाद उसे समतल करते हैं, जब तक यह ठीक से सड़क के लेवल में न आ जाए। एक बार जब वे अपने काम से संतुष्ट हो जाते हैं तो अगले गड्ढ़े की तलाश में निकल जाते हैं, ताकि कोई और बच्चा इसमें गिरकर किसी मुसीबत में न पड़ जाए। दादाराव के लिए गड्ढ़े भरना अपने बेटे को श्रद्धांजलि देने जैसा है। हर रोज जब वे घर पहुँचते हैं तो बेटे की तस्वीर के सामने खामोश खड़े हो जाते हैं और उसे बताते है कि कितने गड्ढ़े दिनभर मे भरे हैं। आज उनके इस मिशन की धुन कम से कम उनके क्षेत्र में तो तेजी से फैल ही रही है। अब यह उनके जीवन का उद्देश्य ही बन गया है और उनके समर्पण से प्रेरित होकर स्थानीय लोग गड्ढ़े भरने में उनका हाथ बंटाने आगे आ जाते हैं।

फंडा यह है कि अगर आपको जीवन का उद्देश्य मिल जाए तो अपूरणीय नुकसान के बाद भी जीवन में आगे बढ़ना थोड़ा आसान हो जाता है।

शेष पृष्ठ 11

शक्ति होती तो अब तक दुनियां स्वर्ग बन गई होती। पाप, गुनाह मिटाने की तो लोगों की प्रार्थना ही नहीं,केवल अपने सुख की मांग, जो कभी किसी के आर्शीवाद से पूरी नहीं होती।

हमारे सौभाग्य की क्या सीमा हो सकती कि इन अन्ध विश्वासों में डूबे हुए देश में परम पूजनीय भगवान देवात्मा की शरण में आने से ग्रामीण, कम पढ़े लिखे, अनपढ़ों को भी अन्ध विश्वासों से बचने का सौभाग्य मिल गया है। इस सौभाग्य को हम अधिक से अधिक अनुभव करें। यदि सम्भव हो ता हम औरों को भी इन अन्ध विश्वासों से बचाने का संग्राम करें।

पत्नि को ताना देने वाले मेरी पोस्ट को जरुर पढ़े।

क्रैसवैल (ब्रिटेन) टोनी एम्स नामक एक शख्स ने फेसबुक पर एक फोटो और पोस्ट शेयर की है । जिसमें उसने पत्नी के लिए कृतज्ञता जताई है। साथ ही परिवार को लेकर उसके संपूर्ण के लिए शुक्रिया भी कहा है । फोटो में उसकी पत्नी शेरेलॉट स्पैरी और बेटा दुनिया से बेखबर होकर सो रहे हैं । पोस्ट की शुरुआत में टोनी ग्लानि महसूस करते हुए कहते हैं कि मैंने इस महिला 'शेरेलॉट' को कभी क्रेडिट नहीं दिया जो मुझे और मेरे परिवार को कितना चाहती है। उन्होंने लिखा कि 'मैं दुनिया को बताना चाहता हूं कि ये दोनों मेरे लिए कितने अहम है।' साथ ही टोनी ने गलती भी मानी कि वह हमेशा सोचते कि पत्नी दिनभर घर पर रहती है, उसके पास कितना काम होगा। जबकि सच्चाई ये थी कि बच्चे की देखभाल में ही उसे कितनी मेहनत करनी पड़ती है। पूरा दिन उसका ख्याल रखने में ही निकल जाता होगा। बच्चे की खुशी के लिए उसने दिनभर खाना भी खाया कि नहीं? टोनी ने लिखा है कि 'मैं इस महिला को श्रेय नहीं देता जो उसका हक है। जब भी मैं घर आता वह थकी रहती। जबकि मुझे सिर्फ अपनी थकान नज़र आती। पर जब गंभीरता से सोचा तब लगा कि ये महिला कितनी गजब है। पहले सोचता था कि वह बेटे के साथ बैठकर टीवी देखती है। पर मैं गल्त था। मेरे ऑफिस जाते ही वो ज्यादा सतर्क हो जाती थी क्योंकि उसे अकेले ही बेटे का ध्यान रखना है। वह बेटे को उठाती है, साफ – सफाई करती है फिर उसे खाना खिलाने और दूध पिलाने में खासा समय लगता है। इस वजह से कई बार वह खुद नहीं खा पाती। फिर बेटे के साथ बैठे रहना, उसके साथ खेलना, गंदी नैपी बदलना, फिर उसे सुलाना। उठ जाए तो फिर उसके साथ खेलना, रो रहा हो तो चुप कराना। फिर सुलाना पर वो स्वयं झपकी तक नहीं ले सकती। क्योंकि उसके खिलौने जमाना है, कपड़े धोना है। घर के काम बाकी हैं सो अलग। तब तक बच्चा फिर उठ जाता है। फिर वही नाश्ता, खाना। तभी ऑफिस से मेरा आना और ये कहना कि तुमने क्या किया दिनभर, जैसा अन्य पिता कहते हैं। पर जब सोचा तो खुद पर गुस्सा आया। इसलिए ये पोस्ट लिखी। गुजारिश है..... अपने बच्चों की मां का सम्मान करें। जो आपके बच्चे और आपके लिए अपनी हर खुशी ताक पर रख रही है। पर कोई शिकायत नहीं। गहरी नींद में सो रहे मेरे दोनों प्यारे बच्चों को मैं बहुत प्यार करता हूं। ये दोनों इस आराम के हकदार हैं।

अति जरूरी निवेदन

धर्म जीवन के पाठकों की सेवा में निवेदन है कि कई वर्षों से हम नोट कर रहे हैं कि काफी पाठकों का पत्रिकाओं का चन्दा बहुत वर्षों से नहीं आ रहा। पत्रों द्वारा प्रार्थना करने पर कुछ साथियों ने कृपा करके या तो चन्दा जो उचित समझा भेजा या भेजने की स्वीकृति दे दी है। यह भी हमें ज्ञात हैं कि बहुत सारे पाठक चन्दा खुशी खुशी देने के लिए तैयार है, चन्दा भेजने के ढंग के बारे में सोचते हैं। उनकी सुविधा के लिए हम अपने बैंकों के अकाऊंट नम्बर आदि लिख रहे हैं। उन बैंकों में पाठक अपने स्थानिय बैंक के द्वारा चन्दा आसानी से भेजने की कृपा कर सकते हैं। हां, कुछ एक ऐसे जन जरूर होगें जिनको पत्रिका में कोई रूचि नही होगी। वह कृपा करके लिखित या फोन के द्वारा पता देने का कष्ट अवश्य करें! फोन न. पत्रिका में दिया हुआ है।

Banks

1. Central Bank of India, Branch Sector 22-C, Chandigarh Account No. 1007071024, IFSC Code No. - CBI No. 20414

यह अकाऊंट **Sh. Baldev Singh, Jagdish Prashad** के नाम है

2. **Punjab National Bank Branch Sector-9, Chandigarh Account No. 1488000100062462, IFSC Code - PUNB0148800**

;g vdkÅaV nso /eZ fe'ku ds uke ls gS bldks **Baldev Singh** और **Jagdish Prashad** operate djrs gSaA

बैंक में चन्दा जमा करने के बाद कृपा करके फोन पर सूचना अवश्य दें, ताकि आपके नाम की रसीद काटी जाए।

शुभ संग्राम
(18 जनवरी से 22 जनवरी 2016 तक)

मल्लेका (सिरसे) श्रीमान बलबहादुर सिंह जी 18 जनवरी को मल्लेका पहुंचे तो उसी दिन शाम को मन्दिर में सुबह शाम सभाओं का प्रोग्राम 18 जनवरी से रखा गया। रात को 8 बजे पहली सभा रखी गई। हाजिर धर्म सम्बन्धियों ने उत्साह महसूस किया और फैसला किया कि सुबह 9 बजे और शाम को 4 बजे सभाएं रखी जाएं। इस प्रकार वहां पर 7 – 8 सभाएं हुई। एक सभा में उन आत्मिक शक्तियों का वर्णन किया गया। जिनके द्वारा मनुष्य को साक्षात ज्ञान प्राप्त होता है। एक सभा में उच्च जीवनधारी लक्ष्मी बाई जी के गुणों पर विचार किया। अगले दिन कई धर्म सम्बन्धियों में अन्मेल की दुख भरी ख़बर मिली। उसको दूर करने का यत्न किया गया। परन्तु यथेष्ट सफलता नहीं मिल सकी। हितकर धर्म सम्बन्धियों की ऐसी सोच दुखप्रद और चिन्ता योग्य है। इस विषय में और संग्राम की आवश्यकता अनुभव हुई ।

संगरुर

जैसे कि पहले पत्रिकाओं के द्वारा सूचित किया गया था। देव धर्म मिशन में 30 जनवरी 2016 से 1 फरवरी 2016 तक संगरूर सत्संग रखा गया। इस उद्देश्य के लिए श्रीमान बलदेव सिंह जी चण्डीगढ़ से और कल्याण से श्रीमान बलबहादुर सिंह जी 30 जनवरी की शाम तक पहुँच गए।

मन्दिर और उसके इर्दगिर्द के कमरों की सफाई, धुलाई का काम डाक्टर नवजोत कालड़ा जी के सम्बन्धियों की कृपा द्वारा बहुत अच्छा किया गया। हाज़रीन के दूध, चाय के लिए अलग आदमी रखे गए। खाने के लिए विशेष आदमी रखे गए। यह सब प्रबन्ध साधन स्थान पर ही किया गया।

इस सतसंग से लाभ उठाने के लिए करनाल, श्री अकबरपुर, दड़वा, चण्डीगढ़, बठिंडा, कल्याण, यमुनानगर, फरीदाबाद, कपूरथला आदि स्थानों से कई धर्म सम्बन्धी पहली सभा से पहले ही पहुंच गए थे। सभाओं का संक्षेप हाल इस प्रकार है ।

30 – 1 – 2016 शाम 7 बजे सभापति श्रीमान बलबहादुर जी, एक भजन श्रीमान किशन सिंह जी चौहान ने बहुत अच्छे भावों से गाया। गुरु महाराज का छवि द्वारा सुन्दर फूलों के हार से अर्चन किया गया। फिर "हमारे पूजनीय सतगुरू जी तुम हो धन्य" नामक भजन का सबने मिलकर गान किया ।

सभापति जी ने बताया कि मनुष्य सुख चाहता है, परन्तु दुखों में फंसता जाता है, परन्तु उसे कारणों का पता नहीं होता। धनवान, राजनैतिक, लीडर, डाक्टर, कहलाने वाले साधू जेलों में दुख भोग रहे है मनुष्य ऐसी चिन्ताएं वा गलतियाँ क्यों करता है, जो उसे दुखों में फंसाती है। इस सबके पीछे उसकी परिचालक भावनाएं हैं। मनुष्य उनसे प्रेरित होकर ही सब चिन्ताएं वा गलतियां करता है । सभापति जी ने हर वर्ग की घटनाओं द्वारा अपना विषय स्पष्ट किया। इन परिचालक भावनाओं को जानने के लिए गुरु महाराज के विशेष प्रभावों की आवश्यकता है। अपने निजी और कई धर्म सम्बन्धियों के उदाहरण दिए ।

इसके बाद श्रीमान बलदेव सिंह जी ने तीन विशेष डाक्टरों की उदाहरणें पेश की जिनके जीवन में

उनकी परिचालक शक्तियों ने महा विनाशकारी लीला का प्रदर्शन किया ।

फिर श्रीमान किशन सिंह जी चौहान ने इस दर से जुड़कर अपने शारीरिक, मानसिक और हार्दिक भले का बडे प्रभावी ढंग से ब्यान किया, इस सभा में 60 – 61 जन शामिल थे, जो सब ही प्रभावित हुए दिखाई दे रहे थे।

31–1–2016 9.30 बजे सुबह – श्रीमान जगदीश जी ने "अद्वितीय है रूप तुम्हारा" नामक भजन का गान किया, फिर देव स्तोत्र का सामूहिक गान वा भाव पूर्ण व्याख्या की गई।

सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी ने बताया कि यह सीता राम जी की बरसी की सभा है। उनका यह सौभाग्य था कि वह देव समाज के महा हितकर वातावरण में आ गए। इसके मैंबर बन गए।

उनके सम्बन्ध में एक भजन "परलोक के सम्बन्धियों को हम नहीं बिसराएंगे" का गान किया गया। फिर सभापति जी ने फरमाया कि जब से इन्सान पैदा हुआ है, उसको इन प्रश्नों का सामना करना पड़ा है: –

1. मनुष्य कहां से आता है ?
2. मनुष्य का लक्ष्य क्या है? इस दुनिया में आकर उसने क्या करना है?
3. मनुष्य मरने के बाद कहां चला जाता है? उसका फिर क्या बनता है?

उपरोक्त प्रश्नों के संक्षेप वैज्ञानिक उत्तर दिए गए। उन्होने बताया है कि मनुष्य के भीतर जीने की प्रबल इच्छा है वह सुख से जीना चाहता है। मनुष्य ने जीने के योग्य बनना है और उचित सुखों को प्राप्त करने के योग्य बनना है, यही सच्चा धर्म मार्ग है। सेवा के कामों के द्वारा मनुष्य की जीवनी शक्ति का विकास होता है। विकास का यही नियम है कि By Building Others we build overselves इस मार्ग अर्थात सत्य धर्म के मार्ग पर चलते हुए अनुचित दुखों से रक्षा होती है ।

मनुष्य की आत्मा किन हालातों में सूक्ष्म शरीर ग्रहण नहीं कर सकती, कुछ उनके विषय में बताया।

इस सभा से यह सबक याद करना कि हमने भी एक दिन मरना है। परलोक वासी सम्बन्धी को भुलाना नहीं। उनके गुणों, उपकारों और शुभ इच्छाओं का ध्यान करके जीवन उच्च बनाना है। उनके प्रति अपनी अवज्ञाओं को देखना है और उनका परिशोध करना है। उनके भले के लिए प्रार्थना करनी है ।

श्रीमान जी ने सीता राम जी के शुभ गुणों और कामों का उच्च भावों से बहुत प्रभावशाली ढंग से ब्यान किया। उनकी उच्च सेवाओं का भी वर्णन किया। उनके शुभ के लिए शुभकामना सम्बन्धी भजन का गान करके सभापति जी ने उनके भले कि लिए शुभ कामना की ।

श्रीमान बलबहादुर सिंह जी, श्रीमान श्रेष्ट कुमार जी और किशन सिंह जी चौहान ने उनके शुभ गुणों का अच्छे भावों से बहुत ही सुन्दर ब्यान किया। 800 रुपए दान प्राप्त हुआ। इस सभा में 80 के करीब हाज़री थी ।

31–1–2016 शाम 7 बजे, सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी थे श्रीमान जगदीश जी ने भजन गाया। "सत्गुरू तुम्हारी निराली शान है।" सभापति जी ने बताया कि सम्बन्धों को त्याग करना आम तौर पर धर्म माना जाता है, जबकि यह महा स्वार्थ की गति है। कहलाने वाले साधुओं और धर्म प्रचारकों को तो इतना भी पता नहीं धर्म होता क्या है। सच्चे धर्म का ज्ञान तो परम पूजनीय भगवान देवात्मा की देव ज्योति और देव तेज के प्रभावों की कुछ प्राप्ति के बाद शुरु होता है। धर्म की गतियां कोई पूजा, पाठ, जप तप, भजन, कीर्तन

नहीं, बल्कि भिन्न भिन्न सम्बन्धों में शुभ व्यवहार होते हैं। इनका ज्ञान केवल देवआत्मा द्वारा पैदा की हुई उच्च संगत द्वारा ही हो सकता है। उच्च भावों के बिना कोई उच्च व्यवहार नहीं होता। देव प्रभाव ही उच्च भाव पैदा करने के लिए उपयोगी अवस्था पैदा करते हैं। नीच व्यवहारों की खराबी या करुपता, हानि, बर्बादी देव ज्योति द्वारा ही नजर आती है। सभापति जी ने बहुत श्रद्धा भाव से कई उच्च भावों से कई उच्च व्यवहारों का वर्णन किया। उनका हृदय कई बार भर भरकर आता था। गुरु महाराज के उपकारों का अपने आपको ऋणी अनुभव कर रहे थे। बहुत ही प्रभावदायक मण्डल बन गया था। सभा के बाद फरीदाबाद से आए एक जोड़े ने प्रार्थना की कि हमारे पास पहुंचकर सभाओं द्वारा हमारी सहायता का जाए श्री श्रेष्टकुमार जी कपूरथला ने कपूरथला पहुंचकर सभाएं रखने की प्रार्थना की । एक लोकल स्कूल के हैडमास्टर साहिब ने भी अपने स्कूल में सभाएं करवाने के लिए कहा।

कुछ नये राजपूत नौजवानों ने भी धूरी से आकर लाभ उठाया। एक धर्म सम्बन्धी ने अपने आप खड़े होकर अपने जीवन परिवर्तन का और सम्बन्धों में आई बहार का मुक्त कण्ठ से ब्यान किया और गुरु महाराज को धन्यवाद दिया। यह सभा हृदयों को अन्दोलित करने वाली थी ।

1–2–2016 सुबह 9 बजे – सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी । श्री सभापति जी ने प्रश्न पूछा कि देव समाज क्या है? कई जनों ने अलग अलग उत्तर दिए। फिर उन्होने बताया कि बेशक देव समाज एक सोसाईटी है, परन्तु यह एक अनोखा, महा हितकर वातावरण है जो विशेष प्रकार के असर रखता है । उन असरों के द्वारा हृदयों में विशेष तबदीली पैदा होती है। ब्रगेडियर सिद्धू साहब अपने माता पिता को जोधपर ले गए। उनके माता जी को सख्त दमें की बिमारी थी । वहां की हवा से वह बिमारी से बच गई। दवाई की जरुरत नहीं रही। वहाँ का विशेष वातावरण माता के लिए वरदान सिद्व हुआ। पुरानी दिल्ली और नई दिल्ली के वातावरण में बहुत अन्तर है। यह दोनों बाहरी वातावरण के उदाहरण हैं। शुद्व हवा का वातावरण सेहत के लिए बहुत हितकर होता है। बोधी आत्मा शुद्व हवा लेने के लिए आराम और धन का त्याग करते हैं। शरीर के अनुकुल वातावरण की भी आम आदमी को होश और समझ नहीं, बोध नहीं। देव समाज एक विशेष वातावरण है जिसके भीतर आत्मिक ज्योति और बल के प्रभाव हैं। यह परम हितकर वातावरण के प्रभाव जब अधिकारी आत्माओं को मिलते हैं तो उनकी विरासत के अनुसार उसमें उच्च परिवर्तन लाते हैं विरासत पर हमारा कोई ज़ोर नहीं, जो मिल गई, सो मिल गई। परन्तु वातावरण को हम चुन सकते हैं। देव जीवन इतना उच्च वातावरण है कि वह हमारी समझ से बहुत ऊपर है। देव जीवन से देव असर निकलते हैं। नेचर क्या है? मनुष्य क्या है? देवआत्मा कौन हैं? यह महत्वपूर्ण प्रश्न हैं। देव समाज का वातावरण आत्मा की बेहतरी के लिए विशेष वातावरण है। एक हाईकोर्ट के जज की जान चली गई, टी.बी. हो गई थी, यदि काम का लालच न करके समय रहते पहाड़ों के वातावरण में चले जाते तो वह बच सकते थे। श्री बजरंग बिहारी जी की घटना बताई। इस वातावरण में श्रीमान जुल्लीराम जी का रिश्वत छोड़ने का ब्यान किया। श्रीमान मधुसूदन जी के परिशोध की घटना बताई। कल्याण के एक अध्यापिक नौजवान जो एक ही बार इस वातावरण में आए तो उन में क्या गजब का परिवर्तन हुआ। रजिन्दर जी देहरादून का परिवर्तन भी इस वातावरण की महिमा को दर्शाता है। सभापति जी ने अपना अनुभव बताया कि मैं देव समाज को घणा करता था, अरदास करता था अपने गुरु के

Regd. Postal No.CHD (0077) 2015-17
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

चरणों में देव समाजियों को मारने की। जब पहले ही साधन में यह असर मिले तों मां का उपकारी रुप नजर आ गया। अपना नीच रूप और नाशुक्रापन रूप नजर आया।

इसके बाद श्रीमान झंडा सिंह जी तुरन्त सभा में खड़े हो गए और अपनी नीचता के बारे में बोलने लग गए। मैं अपनी काली सूरत के विषय में बताना चाहता था। मैं अपनी ग़ल्तियों को स्पष्ट बताकर साफ नहीं हुआ। पत्नि की बहन जो हमारे पास आई हुई थी। वह सुबह देर से उठती थी। एक दिन पत्नि की छोटी सी बात पर मैं तैश में आ गया। मेरे हाथ में मोटा सा रस्सा था। मैने पत्नि को रस्से से पीटा। मेरी पत्नि ने मुझे कुछ भी नहीं कहा। काश ! मै इसका सच्चा परिशोध कर सकूं।। मैं कई बार क्षमा भी मांगी है। फिर अपने मुँह पर ज़ोर ज़ोर से थप्पड़ मारने लगे। और जनों ने उठकर हटाया।

यह देखकर कई जनों के भी आसू बहने लगे। हाजरीन गुरु महाराज के चरणों में झुकने के लिए मजबूर हो गए।

श्रीमान मधू सूजन जी – यहां की सेवा बहुत महसूस हो रही है। मुझे इस वातावरण ने झंझोड़ कर रख दिया है। यदि न आता तो बहुत घाटे में रहता । हाथ पसार कर जैसे श्रीमान सीताराम जी पुकार रहे हों कि इस गुरु के दर पर आओ।

चचेरे भाई के सम्बन्ध में मुझे बहुत महसूस हो रहा है। मेरी सेहत ख़राब हो गई। यह भाई बहुत दुखी और भयभीत हो गया। इधर उधर होकर छुप छुप कर रोने के लिए मज़बूर होते रहे। भाई रोता रहा, मेरा कोई वश नहीं चलता था। दुखी हो रहा हूँ कि मै ही भाई के लिए दुख का कारण! क्षमा चाहता हूँ।

डाक्टर कालड़ा साहिब और परिवार की बेहद सेवा और बहुत संग्राम के आगे सिर झुक रहा है। सच्चा धन्यवाद दे सकूं।

डाक्टर नवजोत जी ने अपनी तरफ से एक बहुत बड़ा फिल्टर श्री अकबरपुर लगाने का प्रण किया।

सभा में सिविल सर्जन साहिब, कुछ और डाक्टर साहिबान, टीचर और मुलाजिम, शिक्षित वर्ग के लोग शामिल थे। सबने बहुत हितकर प्रभाव और प्रेरणाएँ प्राप्त की, बड़ा ही लाभदायक संत्संग सिद्ध हुआ। सभापति जी ने सबका और विशेष कर गुरु महाराज का धन्यवाद अदा किया। जय ध्वनि के साथ सत्संग सम्पन्न हुआ। उपस्थित जन भोजन पाकर अपने अपने ठिकानों

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री-देव-धर्म-मिशन, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने **Surya Laser Den, Chandigarh** *से छपवाकर म. नं. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts